

आर्य आष्टांगिक मार्ग क्या है?

भ्रान्त शिक्षाओं और धर्मों के बारे में प्रश्न

आर्य आष्टांगिक मार्ग बौद्ध जीवन के अभ्यास की नींव है। आर्य आष्टांगिक मार्ग में निहित आठ धारणाएँ ऐसे दृष्टिकोण और व्यवहार हैं, कि जिन्हें बौद्ध चार आर्य सत्यों को जीवन यापन करने के साधन के रूप में अनुकरण करने का प्रयास में उपयोग करते हैं। ये आठ धारणाएँ तीन मुख्य श्रेणियों: बुद्धि, आचरण, और एकाग्रता में पाई जाती हैं। चार आर्य सत्यों के अनुसार, जीवन के सारे दुःख अस्थायी वस्तुओं के कारण आते हैं, और चूंकि सभी वस्तुएँ अस्थायी हैं - यहाँ तक कि स्वयं भी - इसलिए सभी दुःखों से मुक्त होने का एकमात्र तरीका सभी इच्छाओं को छोड़ना है। इसकी प्राप्ति बौद्ध धर्म के अनुसार, आष्टांगिक मार्ग का पालन करने के द्वारा की जाती है।

यद्यपि इसे "मार्ग" कहा जाता है, परन्तु इन आठ घटकों का किसी भी विशेष क्रम में पालन नहीं किया जाना चाहिए। इसकी अपेक्षा, उनका पालन एक साथ इच्छाओं को छोड़ने और निर्वाण को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। आष्टांगिक मार्ग, और स्वयं बौद्ध धर्म, को अक्सर एक आठ-ताड़ियों वाले धर्मचक्र के द्वारा दर्शाया जाता है, जो एक पानी के जहाज के चालक चक्र के समान होता है। आर्य आष्टांगिक मार्ग के घटक सम्यक या सही दृष्टि, सही संकल्प, सही वाक, सही कर्म, सही जीविका, सही प्रयास, सही स्मृति, सही समाधि अर्थात् ध्यान हैं।

सही दृष्टि और सही संकल्प के घटकों को कभी-कभी आर्य आष्टांगिक मार्ग के ज्ञान पहलुओं के रूप में जाना जाता है।

"सही दृष्टि" अनिवार्य रूप से चार आर्य सत्यों में विश्वास करना है: जीवन में दुःख है, दुःख का कारण अस्थायी वस्तुओं की इच्छा है, सब कुछ अस्थायी है, इसके निवारण के लिए आष्टांगिक मार्ग हैं। इसमें पुनर्जन्म (दुबारा जन्म लेना) और कर्म के सिद्धान्त जैसी धारणाओं के बारे में जागरूकता भी सम्मिलित है। बाइबल आधारित हो कहना, यह सच है कि किसी को बचाए जाने के लिए किसी विशेष सत्य के प्रति अधीन होना होगा (यूहन्ना 8:32), परन्तु बाइबल इस बात से असहमत है कि विशिष्ट ज्ञान किसी के उद्धार में एक सक्रिय भाग को पूरा करता है (इफिसियों 2:8; 1 कुरिन्थियों 3:19)।

आर्य सत्यों और आष्टांगिक मार्ग के अनुसार, "सही संकल्प" सर्वोत्तम के लिए परिवर्तित होने की इच्छा को सन्दर्भित करता है। सही संकल्प वाला व्यक्ति बौद्ध धर्म के नियमों के प्रति प्रतिबद्ध होता है और अपने विचारों और व्यवहारों की तुलना इससे करना चाहता है। बाइबल आधारित हो कहना, विश्वासियों को मसीह के मापदण्डों के प्रति अपने विश्वास और कार्यों की तुलना करने के लिए बुलाया गया है (2 कुरिन्थियों 13:5; रोमियों 13:14; यूहन्ना 15:14)। यद्यपि, बाइबल यह भी स्वीकार करती है कि एक व्यक्ति अपने मन की गहराई से जो चाहता है, वह सदैव वैसा नहीं होता, जैसा वह चाहता है (यिर्मयाह 17:9)। बौद्ध धर्म आत्मबोध का पता लगाने के लिए

किसी व्यक्ति को अपने मन की गहरी इच्छाओं को परिवर्तित के लिए कोई उत्तर नहीं देता है (देखें 2 कुरिन्थियों 10:12)।

सही वाक या बोलचाल, सही कर्म या व्यवहार, और सही जीविका के घटकों को कभी-कभी आर्य आष्टांगिक मार्ग के नैतिक पहलुओं के रूप में जाना जाता है।

"सही वाक" का अर्थ ईमानदारी से, विनम्रतापूर्वक और उद्देश्यपूर्ण रीति से शब्दों का उपयोग करना है। इसका अर्थ है, व्यर्थ बात करना, झूठ बोलना, या मौखिक रूप से अपमानजनक बातों से बचना है। सही वाक जितना लिखित शब्दों पर लागू होता है, उतना ही बोले जाने वाले शब्दों पर लागू होता है। सही वाक के बौद्ध दृष्टिकोण का एक रूचिपूर्ण परिणाम निश्चित आत्मिक या पारलौकिक विषयों की चर्चा से बचने का है। बौद्ध धर्म के अनुसार, परम वास्तविकता के कुछ प्रश्न आष्टांगिक मार्ग पर चलने के प्रयासों के लिए अप्रासंगिक हैं, इसलिए उन पर चर्चा करना "सही वाक" नहीं है। बाइबल आधारित हो कहना, हमें अपने शब्दों (नीतिवचन 10:19) पर नियन्त्रण बनाए रखने और अनावश्यक बातों से होने वाले संघर्षों से बचने के लिए कहा गया है (1 तीमुथियुस 6:4)।

"सही व्यवहार" या कर्म में हत्या, चोरी, व्यभिचार, और ऐसे ही बहुत से कार्यों से बचना सम्मिलित है। सामान्य सिद्धान्त सही और गलत क्या है, जो किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान पहुँचाएगा या नहीं। निःसन्देह, बाइबल व्यावहारिक नैतिकता (मत्ती 7:12; 1 कुरिन्थियों 9:27) के लिए एक

चुनौतीपूर्ण दृष्टिकोण को प्रदान करती है, जो नैतिकता और शिष्टाचार के प्रति एक दृष्टिकोण के अधीन व्यवहार के साथ मनोभाव को जोड़ देती है (मत्ती 5:21-22, 27-28)। सही बनाम गलत के लिए बाइबल का मापदण्ड अन्तिम रूप से यह नहीं है कि यह किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान पहुँचाता है, परन्तु क्या यह परमेश्वर के पवित्र स्वभाव के विपरीत है।

"सही जीविका" सही व्यवहार के समान है, परन्तु यह विशेष रूप से किसी के व्यवसाय पर केन्द्रित है। इस सिद्धान्त के अनुसार, किसी को ऐसे व्यवसायों में धोखाधड़ी, झूठ बोलना या भाग नहीं लेना चाहिए जो लोगों को नुकसान पहुँचाते हैं या उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। पशु जीवन और हिंसा के प्रति बौद्ध दृष्टिकोण के कारण, यह नियम पशुओं की हत्या, मांस की बिक्री, या हथियारों के निर्माण या बिक्री से जुड़े किसी भी काम को रोकता है। बाइबल के अनुसार, एक व्यक्ति को अपने जीवन के सभी हिस्सों को समान रूप से शिष्टाचार और नैतिकता से भरे हुए सरोकार के साथ व्यापार सहित, (भजन संहिता 44:21; रोमियों 2:16; 2 कुरिन्थियों 4:2) संचालन करना है। परमेश्वर भी हम से प्रकृति के अच्छे प्रबंधक होने की अपेक्षा करता है (लैव्यव्यवस्था 19:25; 25:2-5, हबक्कूक 2:8, 17)। यद्यपि, बाइबल पशुओं के उपयोग (मरकुस 7:19; उत्पत्ति 1:28) या आत्मरक्षा के लिए वैध साधनों (लूका 22:36) को प्रतिबन्धित नहीं करती है।

सही प्रयास, सही स्मृति, सही समाधि या ध्यान के घटक कभी-कभी आर्य आष्टांगिक मार्ग के एकाग्रता पहलुओं के रूप में जाना जाता है।

"सही प्रयास" को आष्टांगिक मार्ग के अन्य पहलुओं को लागू करने में दृढ़ता और सावधानी की भावना की आवश्यकता होती है। यह निराशावादी सोच और क्रोध जैसे नकारात्मक भावनाओं से बचने के लिए एक प्रेरणा स्रोत के अर्थ को स्वयं में समाए हुए है। एक बार फिर से, यह मानवीय स्वभाव में पाई जाने वाली उस समस्या को प्रस्तुत करता है, जिसका झुकाव स्वार्थी और आलसी होने की ओर है। बौद्ध धर्म एक व्यक्ति में उन पहलुओं को परिवर्तित के लिए कोई विशेष साधन प्रस्तुत नहीं करती है, जो उन्हें परिवर्तित करने की इच्छुक नहीं रखते हैं। जब हम प्रतिरोधी होते हैं, तब भी बाइबल परमेश्वर की इच्छा और मन को परिवर्तित होने की क्षमता के बारे में बात करती है (2 थिस्सलुनीकियों 3:13; 1 कुरिन्थियों 6:11)।

"सही स्मृति" या जागरूकता सही प्रयास के समान है, परन्तु यह आन्तरिक मानसिक और दार्शनिक पहलुओं पर अधिक केन्द्रित है। बौद्ध धर्म एक उच्च स्तर की आत्म-जागरूकता को प्रोत्साहित करता है, जिसमें विशेष ध्यान दिया जाता है कि एक व्यक्ति अपने अनुभवों और पर्यावरण के प्रति कैसे प्रतिक्रिया देता है। इस प्रकार की सचेतना, अतीत या भविष्य पर कम जोर देने के साथ वर्तमान में केन्द्रित होना है। बाइबल आधारित हो कहना, हमें हमारे विचारों की रक्षा करने और हमारे आस-पास के वातावरण के द्वारा हमारे आत्मिक जीवन को प्रभावित करने के प्रति सावधान रहने के लिए कहा गया है (1 कुरिन्थियों 15:33; 6:12)।

"सही समाधि" या ध्यान बौद्ध धर्म का एक मुख्य अभ्यास है, जिसमें श्वास लेने, जप करने और अन्य ध्यान केन्द्रित तकनीकें सम्मिलित हैं। ध्यान की इस शैली का लक्ष्य मन को पूरी तरह से एकाग्रता की वस्तु को छोड़कर शून्य कर देना है। ध्यान के इस रूप की अन्तिम अभिव्यक्ति समाधि है, अर्थात् जब कोई व्यक्ति विभिन्न चिन्तनों के स्तरों के माध्यम से आगे की ओर तब तक प्रगति करता है, जब तक कि वह पूर्ण गैर-चिन्तन और गैर-भाव की अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेता है। यह सिद्धान्त बाइबल की शिक्षा के साथ एक और संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। बाइबल ध्यान और चिन्तन की धारणाओं की प्रशंसा करती है (भजन संहिता 1:2; 119:15) परन्तु मन को "शून्य करने" के लक्ष्य के साथ नहीं। इसकी अपेक्षा, मसीही ध्यान का लक्ष्य परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर ध्यान केन्द्रित करना है। बाइबल में, ध्यान की शिक्षा परमेश्वर के प्रकट किए गए वचन के साथ स्वयं के मन को भरने के रूप में दी गई है।

संक्षेप में, बाइबल आधारित मसीहियत और बौद्ध धर्म आधारित आर्य आष्टांगिक मार्ग के बीच समझौते के कुछ बिन्दु पाए जाते हैं। यद्यपि, कई मतभेद मौलिक और कट्टर विरोधी दोनों ही स्वभाव के हैं। आर्य आष्टांगिक मार्ग के अनुसार, एक व्यक्ति जो स्वयं की सहायता सभी पहलुओं को पूरा करने में नहीं कर सकता है, वह इस मार्ग का पालन करने में असमर्थ है। उसका एकमात्र विकल्प यह अपेक्षा करना है कि उसकी इच्छाएँ, संकल्प और प्रयास स्वयं ही परिवर्तित हो जाएंगे। बाइबल बताती है कि भले की प्राप्ति के लिए एक व्यक्ति के मन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है

(यिर्मयाह 17:9; रोमियों 3:10-12; 7:18-24), परन्तु मसीह के साथ बने हुए सम्बन्ध के माध्यम से कोई भी मन परिवर्तित किया जा सकता है (रोमियों 7:25; गलतियों 3:13)।

स्रोत / Source: <https://www.gotquestions.org/Hindi/Hindi-Noble-Eightfold-Path.html> | English: <https://www.gotquestions.org/Noble-Eightfold-Path.html>

www.GotQuestions.org · <https://www.gotquestions.org/Hindi> · © Copyright
Got Questions Ministries · questions@gotquestions.org